भारतीय विश्वविद्यालयों में अनुशासन का स्तर एवं उच्च शिक्षा की तस्वीर

[1]प्रीति शर्मा, [2]स्वीटी शर्मा
[1]सहायक प्रोफेसर [2]अध्यापिका
[1]इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार इंजीनियरिंग **विभाग** पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर

सारांश :– अनुशासन का अर्थ आत्मनियंत्रण है। अनुशासन के बिना ना तो संस्था चल सकती है ना ही राष्ट्र। शिक्षा का उद्देश्य छात्रों का सर्वांगिण विकास करना है। विश्वविद्यालय स्वस्थ समाज के निर्माण में निर्णायक की भूमिका निभाते है, इससे ये जानना आवश्यक हो जाता है कि विश्वविद्यालय में अनुशासन का कौन सा स्वरूप है। भारत के विश्वविद्यालय की शिक्षा गुणवत्ता की दृष्टि से विश्वस्तर विश्वविद्यालयों की रैंकिग में काफी पीछे हैं। द टाइम्स विश्वयूनिवर्सिटीज़ रैंकिग के अनुसार सन् 2013 में भारत के "पंजाब विश्वविद्यालय" का स्थान 226वाँ था, जबकि सन् 2017 में भारत के किसी भी विश्वविद्यालय का स्थान 200 के अन्दर नहीं है। भारत के 90 फीसदी विद्यालयों और 70 फीसदी विश्वविद्यालयों का स्तर बहुत कमजोर है। विश्वविद्यालय प्रशासन बढ़ती हुई अनुशासनहीनता से परेशान है, युवा छात्रों की अनियमित जीवनशैली, नियम एवं कानून का उल्लंघन, छात्रों का कक्षा में देर से उपस्थिति, अनुपस्थिति, कक्षाएँ बंकींग परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन न कर पाना, विश्वविद्यालय में हड़ताल की खबरें, राष्ट्रीय सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाना, गुरु का अपमान, अराजकता फैलाना अनुशासन हीनता को प्रदर्शित करता है। विश्वविद्यालय में अनुशासनहीनता का कारण "छात्रों की किशोरावस्था भी है, जो तनाव व तूफान की अवस्था है।" अन्य कारणों में आदर्श शिक्षकों का अभाव, शिक्षक का अनुशासन के सही अर्थों से अंजान होना, संकीर्ण एवं स्वार्थी राजनीतिक दलों का हस्तक्षेप विद्यालय में उचति पाठ्यक्रम का अभाव, छात्र की योग्यता का वास्तविक मूल्यांकन, शिक्षण और शिक्षक के बीच कोई जीवित सम्पर्क न होना, सत्यनिष्ठा तथा समयबद्धता जैसे गुणों का अभाव, छात्रों का अनैतिक गतिविधियों की ओर आकर्षण, विदेशी संस्कृतियों का दुष्प्रभाव है। विश्वविद्यालय का वर्तमान स्तर एवं परिस्थितियां इस विचार को पुनः जन्म देती है कि शिक्षा में अनुशासन के मानदण्डों का कड़ाई से पालन हो, जिसका उद्देश्य समाज को बेहतर नागरिक प्रदान करना हो। विश्वविद्यालय में सहपाठ्यक्रम जैसे– संगीत, कला, नाटक, फोटोग्राफी, क्लेमाडलिंग, पत्रिका लेखन, खेलकूद प्रशिक्षण, योग प्रशिक्षण, स्काउट्स गाइड एवं एन.सी.सी. क्रियेटिव कार्नर आदि के द्वारा छात्र व्यवहारिक ज्ञान के अनुभव को जान पाता है। बहुत हद तक सहपाठ्यक्रम छात्रों के चित्तसौंदर्य विकास, चरित्र निर्माण, अध्यात्मिक विकास में सहायक होगा।

मूलशब्द : अनुशासन, शिक्षण, छात्र

प्रस्तावना : अच्छे विद्यालय अनुशासन के निर्माता हैं, अनुशासन पशुता से ऊपर उठाता है। "अनुशासन राष्ट्र का जीवन रक्त है।" अनुशासन मानव सभ्यता के विकास की पहली सीढ़ी है, जिसके सहारे हमारा क्रमिक–विकास संभव हुआ है। अनुशासन शब्द का अर्थ है– किसी विषय के अधीन रहना या नियमों के शासन में रहना।

अनुशासन क्या है? अनुशास्यते नैन।
अर्थात स्वयं का, स्वयं पर शासन।
अपने ऊपर स्वयं शासन करना
एवं शासन के अनुसार अपने जीवन
का निर्वाह करना ही अनुशासन है।

अनुशासित जीवन जीने का सबसे उचित माध्यम शिक्षा है। एक बालक को परिवार से लेकर विश्वविद्यालय तक अनुशासन में रहने की शिक्षा दी जाती है। जिससे वह अपने जीवन का निर्वाह उचित मार्ग पर चलकर कर सकें। अनुशासन की शिक्षा केवल पुस्तकों से ही नहीं मिलती, बल्कि व्यस्कों के या स्वयं के अनुशासनसे भी मिलती है। भले ही अनुशासन की पहली पाठशाला परिवार होता है, पर एक स्वस्थ समाज के निर्माण में निर्णायक भूमिका उसके विद्यालय निभाते हैं। ऐसे में यह प्रश्न और महत्वपूर्ण हो जाता है कि हमारे विद्यालयों में अनुशासन का कौन सा स्वरूप होना चाहिए। अनुशासन को दूसरों के द्वारा पालन करने की सलाह देने से पहले स्वयं पालन करना चाहिए। अनुशासन में व्यक्ति विशेष की भलाई और प्रगति में सहायक है। अतः यह महत्वपूर्ण है कि देश में रहने वाला हर व्यक्ति अनुशासन का पालन करें। अनुशासन हमारे जीवन की नाड़ी है, जीवन में अनुशासित न होने से निश्चित रूप से नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, यद्यपि कुछ समय के लिए आपको अस्थायी खुशी जरूर मिलेगी, लेकिन अंततः आपको केवल मुश्किलों का ही सामना करना पड़ेगा, अनुशासन हमारे जीवन को संचालित करने में एक आधार की भूमिका निभाता है। विद्यालय में शिक्षक का कर्तव्य है कि छात्रों को अपने जीवन में अनुशासन के महत्व का एहसास कराए। अनुशासन एक धागे के समान है, जो मोतियों को एक साथ पिरो कर रखता है, जिससे एक खूबसूरत हार का निर्माण होता है।

विश्वविद्यालय में शिक्षा का स्तर :

भारत की उच्चतर शिक्षा व्यवस्था संख्या की दृष्टि से अमेरिका और चीन के बाद तीसरे नम्बर पर है, लेकिन गुणवत्ता की दृष्टि से दुनिया के शीर्ष 200 विश्वविद्यालयों में भारत का एक भी विश्वविद्यालय नहीं है। विश्व स्तर के विश्वविद्यालय में दिल्ली विश्वविद्यालय का भी नाम नहीं है।

"द टाइम्स विश्व यूनिवर्सिटीज रैंकिग के अनुसार अमरीका का केलिफोर्निया इंस्टीट्यूट (2013) ऑफ टेक्नॉलोजी प्रथम स्थान पर था, जबकि भारत का पंजाब विश्वविद्यालय का स्तर विश्व में 226वाँ था।" "द टाइम्स विश्व यूनिवर्सिटीज रैंकिंग 2016–17 के अनुसार यूनाइटेड किंगडम का ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रथम स्थान पर है, जबकि भारत का 200 शीर्ष से 100 विश्वविद्यालय में कोई स्थान नहीं है।"

उच्च शिक्षा की तस्वीर :

विश्वविद्यालय की समस्याओं में एक समस्या छात्रों की अनुपस्थित है। विद्यालय में नौ छात्रों में से एक ही विद्यालय पहुँच पाता है। नैसकाम और मैकिन्से के शोध के अनुसार मानविकी में 10 में से एक और इंजीनियरिंग में डिग्री ले चुके चार में से एक भारतीय छात्र ही नौकरी पाने के योग्य है। राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद का शोध बताता है कि भारत के 90 फीसदी कॉलेजों और 70 फीसदी विश्वविद्यालयों का स्तर बहुत कमजोर है। भारतीय विश्वविद्यालयों में शिक्षकों की कमी एवं उनका अनुशासन के सही अर्थो से अंजान होना।

विश्वविद्यालयों में अनुशासन की आवश्यकता :

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक स्टेनले हॉल के अनुसार "किशोरावस्था तूफान व तनाव की अवस्था है।" जब एक छात्र विश्वविद्यालय में प्रवेश लेता है, तो उसकी अवस्था मानसिक अशांति और उथल–पुथल से भरी होती है। इस अशांति का महत्वपूर्ण कारण उम्र की भावना है। यह विज्ञान और बुद्धि की उम्र है। आधुनिक युवक संदेह और प्रश्नों से भरे हुए है, छात्र अपने बड़ों के विपरीत व्यवहार के साक्षी हैं वे जो उपदेश देते हैं और वे क्या अभ्यास करते हैं, इसके बारे में स्पष्ट विपरीतता देखते हैं। शैक्षिक अनुशासन में क्रमशः मानव शरीर और मस्तिष्क की स्वस्थता शामिल है।

विश्वविद्यालयों में अनुशासनहीनता का स्तर/कारण :

हमारे शिक्षक और प्रबंध समिति विश्वविद्यालय में बढ़ती अनुशासनहीनता से बहुत ज्यादा परेशान है। वर्तमान समय में युवा छात्र अपनी अनियमित जीवनशैली के चलते नियमों और कानून को तोड़ रहे हैं। छात्रों का कक्षा में देर से उपस्थित होना, कक्षाएं बंकींग करना, जिससे छात्रों का परीक्षाओं की ओर ध्यान नहीं दे पाना और अपने परीक्षणों में भी अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाना अनुशासनहीनता के प्रभाव को प्रदर्शित करता है। अनुशासन हीनता का दूसरा महत्वपूर्ण कारण शैक्षिक संस्थानों में संकीर्ण स्वार्थी राजनीतिक दलों के हस्तक्षेप हैं। सभी राजनीतिक दलों ने विश्वविद्यालय में अपने संगठन स्थापित किये हैं, वे छात्र समुदाय का शोषण करने के अवसर खोजते रहते हैं। विश्वविद्यालय में आये दिन हड़ताल की खबर छात्रों के व्यवहार में हररोज की घटना का विषय बन गयी है। छात्र अपने हिंसात्मक आचरण से राष्ट्रीय संपत्ति को नुकसान पहुँच से, अपने गुरु का अपमान करने और उन पर हमला करने, अराजकता फैलाने में जरा भी संकोच नहीं करते हैं।

शिक्षा की प्रणाली एवं परीक्षा की व्यवस्था में परिवर्तन :

परीक्षा एक छात्र की क्षमता का कोई परीक्षण नहीं है। ये उपलब्धि योग्यता की वास्तविक परीक्षा से ज्यादा परिस्थिति का मामला है। शिक्षक और शिक्षण के बीच कोई जीवित संपर्क नहीं है। शिक्षक अपने छात्रों को प्रेरित एवं अनुशासित करने में असफल है, ये परिस्थितियां खुद को अनुशासनहीनता एवं आक्रोश के रूप में दिखती हैं। ज्यादातर शिक्षक विद्यालय में अनुशासन के सही अर्थो से अंजान हैं, उन्हें यह कहते सुना जा सकता है कि बिना कठोर नियम के बच्चे पढ़ेंगे कैसे। कभी–कभी छात्र के खराब व्यवहार का कारण उसकी परिवारिक परिस्थियां भी होती है। विद्यार्थी अपनी समस्याओं को स्वीकार करने और सहने में सक्षम नहीं होते है, जिससे अनुशासन को महत्व नहीं दे पाते। विद्यालय में उचित पाठ्यक्रम का अभाव भी अनुशासनहीनता का कारण है। नकल की प्रवृत्ति के कारण कम परिश्रम करने वाले छात्र अधिक परिश्रम करने वाले छात्र से अधिक अंक प्रापत कर लेते हैं, जिससे उनमें अनुशासनहीनता की भावना का उदय होता है, इस प्रक्रिया में शिक्षक भी संलग्न होते हैं। सत्यनिष्ठा तथा समयबद्धता, जैसे गुणों का अभाव होता जा रहा है, आज की शिक्षा पद्धति ही दोषपूर्ण है, शिक्षा में नैतिक शिक्षा का कोई स्थान नहीं है। अच्दे और आदर्श शिक्षकों का भी अभाव है। आज की शिक्षा व्यवसाय बन गयी है। पश्चिमि सभ्यता की चकाचौंध ने छात्रों को गुमराह कर दिया है। दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले विदेशी कार्यक्रमों और फिल्मों ने छात्रों को अनैतिक गतिविधियों की ओर अग्रसर कर दिया है। भारतीय समाज पर विदेशी संस्कृति के दुष्प्रभाव से छात्र वर्ग भी अछूता नहीं रह गया है।

अनुशासन एवं शिक्षण में नये विकल्प हेतु प्रयास एवं सुझाव शिक्षा का उद्देश्य :

स्काउट्स एवं गाइड, एस.सी.सी., नेवी, एन.एस.एस. की अनिवार्यता छात्रों की अनुशासनहीनता की घटनाओं ने इस विचार को पुनः जन्म दे दिया है कि विश्वविद्यालय में एन.सी.सी./नेवी जैसे सैन्य प्रशिक्षण अनिवार्य कर देना चाहिए। इससे छात्रों में अनुशासन आता है तथा इससे राष्ट्र प्रेम, सेवा, त्याग बलिदान और निष्ठा जैसे महान गुणों को बढ़ावा मिलता है और छात्र शारिरिक और मानसिक दृष्टि से स्वस्थ बने रहेंगे और उनमें एकता की भावना राष्ट्र के प्रति प्रेम, निष्ठा एवं कर्तव्य की भावना जागृत होगी।

खेलकूद प्रशिक्षण को बढ़ावा : खेलकूद शिक्षा का अनिवार्य अंग है। अनुशासन एवं शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों का शारीरिक, मानसिक और नैतिक विकास करना है। खेलकूद से छात्रों में नेतृत्व, आज्ञापालन, समान लक्ष्य के लिए मिलकर काम करना, साहस, सहनशीलता जैसे आवश्यक गुणों का विकास होता है। उपर्युक्त गुणों से सम्पन्न छात्र आगे चलकर देश के योग्य नागरिक बन सकते हैं। छात्रों को शारीरिक और मानसिक रूप से समृद्ध करने हेतु विभिन्न प्रकार के खेलकूद प्रशिक्षण को बढ़ावा मिलना चाहिए, इसके लिए विश्वविद्यालय स्तर, संभागीय स्तर तथा राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना चाहिए तथा प्रशिक्षित कोच द्वारा खेलों का भी प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। विश्वविद्यालय में आयोजित परीक्षा एवं मूल्यांकन स्तर में सुधार लाया जाए। छात्रों के खराब व्यवहार के कारण को समझने की जिम्मेदारी शिक्षकों की है और उन्हें अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। अत्यधिक अराजकता फैलाने वाले छात्रों के लिए कड़े नियम और कानून होने चाहिए और जुर्माना रूपी दण्ड का प्रावधान होना चाहिए। शिक्षा पद्धति में व्यापक सुधार किया जाए और उसका व्यवसायीकरण रोका जाए।

मूल्यों का पाठ्यक्रम में समावेश हो : मूल्यशिक्षा का पाठ्यचर्या में समावेश होना चाहिए। राधाकृष्णन ने भी अपने सुझावों में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता को महसूस किया। प्रोफेसर अर्बन अपनी पुस्तक "फण्डामेन्टल ऑफ ऐथिक्स" में लिखा है कि "मूल्य वह है जो व्यक्ति तथा उसकी जाति के संरक्षण में सहायक हैं। ..... केवल यही परमरूप से और साध्य रूप से मूल्यवान है, जो आत्माओं के विकास या आत्मसाक्षात्कार की ओर ले जाये। ..... कई महापुरुष जैसे सुकारत, ईसामसीह एवं गाँधीजी ने मूल्यों के लिए मृत्यु का वरण किया।"

योग्य शिक्षा से आत्म अनुशासन

जिस तरह शिक्षा के बिना जीवन अधूरा है, ठीक उसी तरह योग के बिना अच्दे स्वास्थ्य की कल्पना बेकार है। शारीरिक, मानसिक या अध्यात्मिक संस्कृति के रूप में योगासनों का इतिहास समय की अनंत गहराइयों में छिपा हुआ है। योगाभ्यास केवल व्यस्कों के लिए ही नहीं बल्कि टीनएजर और बच्चों के लिए भी आवश्यक है। छात्रों के लिए योग बहुत ही लाभदायक माना गया है, इससे छात्रों के मन मसितष्क में स्थिरता आती है। पढ़ाई में ध्यान केन्द्रित करने में सहायता मिलती है। इसके चमत्कार को नकारा नहीं जा सकता है। दुनिया के अधिकांश देशों में योग शिक्षा अनिवार्य कर दी गयी है। योग दृढ़ता एवं एकाग्रता को बढ़ाता है, योग द्वारा छात्र का तनमन स्वस्थ और निरोग रहेगा, जिससे उनका मन पढ़ाई में लगेगा। योग मन को आत्मविश्वास से भरता है एवं बुद्धि की वृद्धि में सहायक होगा। योग व्यसनों से निजाद दिलाता है, लक्ष्य प्राप्ती में सहायक, छात्र योग के बल पर अपने मस्तिष्क को शुद्ध करके विचार शक्ति को बढ़ा सकता है। जो एक छात्र को अनुशासित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा, योग चित सौन्दर्य विकास सामाजिक विकास, भावनात्मक विकास, बौद्धिक विकास में सहायक है। अरस्तू के अनुसार– "स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का सृजन ही शिक्षा है।" जिस प्रकार राष्ट्र की सुरक्षा के लिए सेना अनुशासनबद्ध होकर कढ़ाई से नियमों का पालन करती है और उनके अनुशासन के अपने मापदंड होते है, इसी प्रकार शिक्षा में अनुशासन के मानदण्डों का कड़ाई से पालन होना चाहिए। जिसका उद्देश्य समाज को बेहतर नागरिक प्रदान करना हो, जो स्वयं स्वस्थ समाज का निर्माण कर सके। विश्वविद्यालय स्तर के प्रशासनिक कार्यों में छात्रों का योगदान छात्रों को अनुशासनबद्ध होने में सहायक होगा।

परिणाम :

हमें उम्मीद है कि उपर्युक्त प्रयासों एवं परिवर्तनों के पश्चात वर्तमान अराजकता निश्चित रूप से समय के साथ अनुशासन, सभ्यता और शिष्टता पर आधारित नई सोच को जन्म देगी।

निष्कर्ष :

अनुशासन से महत्वपूर्ण सफलताएं और उपलब्धियां हासिल होंगी। ये उपलब्धियां हमारे लिए प्रेरणा का प्रबल स्तंभ बनेगी। जिस देश के लोग अनुशासित हैं, वह देश निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होता रहेगा, वह सभी क्षेत्रामें आगे बढ़ता रहेगा। सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार– "हमें मानवता को उन नैतिक जड़ों तक वापस ले जाना चाहिए, जहाँ से अनुशासन और स्वतंत्रता दोनों का उद्गम हो।" महानदार्शनिक अफलातून "प्लेटो" का कहना है कि "राष्ट्र का निर्माण चट्टानों तथा वृक्षों से नहीं वरन् उसके नागरिकों के चरित्र से किया जाता है।" जब किसी देश के नागरिक अनुशासित होगें तो वह अपने देश को उन्नति के पथ पर अग्रसर करने में सक्षम होंगे। एक अनुशासित व्यक्ति सूचरित एवं मन वचन, कर्म से शुद्ध होता है। इससे स्पष्ट है कि राष्ट्र एवं सम्पूर्ण समाज के लिए अनुशासित व्यक्ति या नागरिक का महत्व है। भारत जैसे विकासशील देश नियमित सेना का खर्च नहीं उठा सकता है, सहायक पाठ्यक्रम और गतिविधियाँ छात्रों के शारीरिक और मानसिक रूप से सुदृढ़ बनाने में सहायक होगी, ताकि आवश्यकता पड़ने पर छात्र सैनिकों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर देशरक्षा में अपना योगदान दे सकें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1– पाण्डेय, रामसकल : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, अग्रवाल पब्लिकेशन।
2– सिंह, कर्ण : एजुकेशन डेवलपेमन्ट ऑफ एजुकेशनल सिस्टम इन इण्डिया।
3– शिबिल मार्सल : एन एक्सपेरिमेन्ट इन एजुकेशन।
4– रिचर्ड स्टेन्ले पीटर, एथीक एण्ड एजुकेशन।